सोवियत संघ का पतन और पूर्वी यूरोप का रूपांतरण (1989–2000)
The Collapse of the Soviet Union and Transformation of Eastern Europe (1989–2000)

1989 से 1991 के बीच घटित घटनाओं ने यूरोप की शक्ति संरचना को मूल रूप से बदल दिया। पूर्वी यूरोप में साम्यवादी शासन के पतन, बर्लिन दीवार के ध्वंस और अंततः सोवियत संघ के विघटन ने शीत युद्ध की द्विध्रुवीय विश्व व्यवस्था को समाप्त कर दिया।
मिखाइल गोर्बाचेव की ग्लास्नोस्त (खुलापन) और पेरेस्त्रोइका (पुनर्गठन) नीतियों ने सोवियत प्रणाली में सुधार का प्रयास किया, परंतु इसके परिणामस्वरूप राजनीतिक नियंत्रण कमजोर हो गया। पोलैंड, हंगरी, चेकोस्लोवाकिया और रोमानिया में जनांदोलनों ने साम्यवादी शासन को समाप्त कर लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं की स्थापना की।
आर्थिक दृष्टि से पूर्वी यूरोप ने नियोजित अर्थव्यवस्था से बाजार अर्थव्यवस्था की ओर संक्रमण किया, जिसे “शॉक थेरेपी” कहा गया। इतिहासकार इस परिवर्तन को केवल राजनीतिक पतन नहीं, बल्कि वैचारिक परिवर्तन के रूप में भी देखते हैं, जिसमें समाजवाद से पूँजीवाद की ओर व्यापक संक्रमण हुआ।
निष्कर्षतः सोवियत संघ का पतन आधुनिक यूरोपीय इतिहास की निर्णायक घटना थी, जिसने एकध्रुवीय विश्व व्यवस्था, यूरोपीय संघ के विस्तार और वैश्वीकरण की प्रक्रिया को तीव्र गति प्रदान की।